PROF. SYED AINUL HASAN

Prof. Syed Ainul Hasan is a highly regarded educationist with an extensive career in academia, specializing in Indology, Indian Culture, Comparative Studies, Language, and Literature.

2. Born on 15th February, 1957, Prof. Hasan obtained his Bachelor's degree from Allahabad University in 1978 and a Master's in Persian Language and Literature from Jawaharlal Nehru University (JNU), New Delhi, in 1981. He earned his doctorate for his research on Iranian poetess Forough Farrokhzad. His scholarly work encompasses Modem Persian Literature, Indo-Iranian Relations, Indian Culture, and Indie Studies, guiding numerous research projects throughout his career. His academic pursuits extend to comparative literature, Indo-Persian culture, and the popularization of Indian wisdom through the stories of Panchatantra. He played a pivotal role in fostering Indo-Afghan relations, establishing the Pashto Chair at JNU's Centre of Persian and Central Asian Studies, and introducing the Afghan Resource Centre. He has authored several books and articles focusing on Indian Knowledge Systems, Indian Culture, Literature and Society, Literary Relations, and Cultural Coexistence. A distinguished poet, he has represented India at poetic gatherings in Iran, Afghanistan, Tajikistan, the USA, and Canada. He has presented papers at numerous international seminars, chaired academic sessions, and delivered keynote addresses. Notably, he has supervised over 100 doctoral theses on diverse literary and cultural themes.

3. Prof. Hasan has contributed scholarly research papers to national and international journals and led significant academic projects sponsored by the University Grants Commission (UGC), Indian Council of Historical Research (ICHR), and Indian Council of Social Science Research (ICSSR). Additionally, as part of international academic exchange programs, he served as a Fulbright Fellow at Rutgers State University, New Jersey, USA, in 2007, sharing his expertise in Indology and promoting Indo-US academic cooperation.

4. Currently, Prof. Hasan serves as the Vice Chancellor of Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad, Telangana. Under his leadership, the university has introduced skill- based vocational courses and flagship programs, including: Fashion and Interior Designing, Medical Laboratory Technology and Medical Imaging Technology with Emergency & Trauma Care Technology (ETT) courses, Four-year Integrated Teacher Education Programs, BA LLB, LLB, and LLM programs to promote legal education in vernacular languages. He has actively promoted female education and empowerment, especially among marginalized communities. He has also initiated environmental conservation efforts, developing a biodiversity park and promoting sustainable practices on the university campus.

5. Prof. Hasan has been the recipient of several prestigious awards. In 2017, he was honoured with the National Award and 'Certificate of Honour' by the President of India for his contributions to classical languages. He received the 'Academic Excellence Award' from the Government of Afghanistan in 2019, the 'Lifetime Achievement Award' from the Islamic Education Centre in Chicago in 2015, and the 'Persian Poet of the Year' title from Iran's Ministry of Culture in 2007. Recently, he was recognized by Akhil Bhartiya Rashtriya Shaikshik Mahasangh (ABRSM) for his contributions to literature, education, and the implementation of the National Education Policy (NEP) 2020.

प्रो. सैयद ऐनुल हसन

प्रो. सैयद ऐनुल हसन अत्यंत सम्मानित शिक्षाविद् हैं, जिनका अकादमिक क्षेत्र में व्यापक करियर है। उनकी विशेषज्ञता इंडोलॉजी, भारतीय संस्कृति, तुलनात्मक अध्ययन, भाषा और साहित्य में है।

2. 15 फरवरी, 1957 को जन्मे, प्रो. हसन ने 1978 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री और 1981 में जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू), नई दिल्ली से फारसी भाषा और साहित्य में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने ईरानी कवयित्री फोरो फारुखज़ादपर अपने शोध के लिए डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। उनके शोधकार्यों में आधुनिक फ़ारसी साहित्य, भारत–ईरानी संबंध, भारतीय संस्कृति और इंडी स्टडीज शामिल हैं, और उन्होंने अपने पूरे करियर में कई शोध परियोजनाओं का मार्गदर्शन किया है। उनके शैक्षणिक कार्यकलापों में तुलनात्मक साहित्य, भारत–फ़ारसी संस्कृति और पंचतंत्र की कहानियों के माध्यम से भारतीय ज्ञान को लोकप्रियता दिलाना शामिल है। उन्होंने भारत–अफ़गान संबंधों को बढ़ावा देने, जेएनयू के फ़ारसी और मध्य एशियाई अध्ययन केंद्र में पश्तो चेयर की स्थापना और अफ़गान रिसोर्स सेंटर की शुरुआत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने भारतीय ज्ञान प्रणाली, भारतीय संस्कृति, साहित्य और समाज, साहित्यिक संबंध और सांस्कृतिक सह–अस्तित्व पर केंद्रित कई किताबें और लेख लिखे हैं। एक प्रतिष्ठित कवि के रूप में उन्होंने ईरान, अफ़गानिस्तान, ताजिकिस्तान, अमेरिका और कनाडा में कवि सम्मेलनों में भारत का प्रतिनिधित्व किया है। उन्होंने कई अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों में शोधपत्र प्रस्तुत किए हैं, अकादमिक सत्रों की अध्यक्षता की है और मुख्य व्याख्यान दिए हैं। उल्लेखनीय रूप से, उन्होंने विविध साहित्यिक और सांस्कृतिक विषयों पर 100 से अधिक डॉक्टरेट शोध प्रबंधों का पर्यवेक्षण किया है।

3. प्रो. हसन ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीयपत्रिकाओं में विद्वत्तापूर्ण शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी), भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद (आईसीएचआर) और भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर) द्वारा प्रायोजित महत्वपूर्ण शैक्षणिक परियोजनाओं का नेतृत्व किया है। इसके अतिरिक्त, अंतरराष्ट्रीयशैक्षणिक विनिमयकार्यक्रमों के एक हिस्से के रूप में, उन्होंने 2007 में रटगर्स स्टेट यूनिवर्सिटी, न्यू जर्सी, यूएसए में फुलब्राइट फेलो के रूप में कार्य किया, जहां उन्होंने इंडोलॉजी में अपनी विशेषज्ञता साझा की और भारत–अमेरिका शैक्षणिक सहयोग को बढ़ावा दिया।

4. वर्तमान में, प्रो. हसन हैदराबाद, तेलंगाना में मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में कार्यरत हैं। उनके नेतृत्व में, विश्वविद्यालय ने कौशल–आधारित व्यावसायिक पाठ्यक्रम और फ्लैगशिप कार्यक्रम शुरू किए हैं, जिनमें फैशन और इंटीरियर डिजाइनिंग, मेडिकल लैबोरेटरी टेक्नोलॉजी और मेडिकल इमेजिंग टेक्नोलॉजी के साथ इमरजेंसी और ट्रॉमा केयर टेक्नोलॉजी (ईटीटी) पाठ्यक्रम, चार वर्षीय एकीकृत टीचर एजुकेशन प्रोग्राम, स्थानीय भाषाओं में कानूनी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए बीए एलएलबी, एलएलबी और एलएलएम पाठ्यक्रम शामिल हैं। उन्होंने विशेष रूप से, कमज़ोर समुदायों के बीच महिला शिक्षा और सशक्तिकरण को सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया है। उन्होंने जैव विविधता पार्क विकसित करके और विश्वविद्यालय परिसर में संधारणीय पद्धतियों को बढ़ावा देकर पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों की भी शुरुआत की है।

5. प्रो. हसन कोकई प्रतिष्ठित पुरस्कार मिल चुके हैं। वर्ष 2017 में, शास्त्रीय भाषाओं में उनके योगदान के लिए उन्हें भारत के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार और 'सर्टिफिकेट ऑफ ऑनर' से सम्मानित किया गया। वर्ष 2019 में उन्हें अफ़गानिस्तान सरकार से 'अकादमिक उत्कृष्टता पुरस्कार', 2015 में शिकागो में इस्लामिक एजुकेशन सेंटर से 'लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड' और 2007 में ईरान के मिनिस्ट्री ऑफ कल्चर से 'पर्सियन पोएट ऑफ़ द ईयर' का खिताब मिला। हाल में, साहित्य, शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के कार्यान्वयन में उनके योगदान के लिए अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ (एबीआरएसएम) द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया।